नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

अनियोजित विकास की बाढ़ में बहते शहर

इस बार का मानसून केवल बारिश नहीं लाया है, उसने देश के विकास मॉडल पर भी कई असहज प्रश्न खड़े कर दिए हैं. गुजरात से लेकर महाराष्ट्र, दिल्ली-एनसीआर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, असम और दक्षिण भारत तक हर ओर एक जैसी तस्वीर दिखाई दे रही है. कहीं शहर पानी में डूबे हैं, कहीं पहाड़ दरक रहे हैं, कहीं सड़कें बह गई हैं तो कहीं लोगों को घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाना पड़ रहा है. यह मान लेना आसान है कि असामान्य वर्षा ही इस तबाही का कारण है, लेकिन सच्चाई इससे कहीं अधिक गंभीर है. दरअसल, पानी में केवल शहर नहीं डूब रहे, बल्कि हमारी दशकों पुरानी अव्यवस्थित टाउन प्लानिंग और विकास की सोच भी बह रही है.

दरअसल, हर मानसून के साथ वही दृश्य दोहराए जाते हैं. कुछ घंटों की बारिश के बाद सड़कें नदियों में बदल जाती हैं, अंडरपास जलाशय बन जाते हैं, अस्पतालों और सरकारी कार्यालयों में पानी भर जाता है और करोड़ों रुपये की सार्वजनिक संपत्ति देखते ही देखते नष्ट हो जाती है. इसके बावजूद हर वर्ष इसे प्राकृतिक आपदा कहकर भूल जाने की प्रवृत्ति बनी रहती है.

असल समस्या बारिश नहीं, बल्कि वह विकास है जिसने प्रकृति के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा. शहरों के तालाब पाट दिए गए, नालों पर कॉलोनियां बस गईं, नदी के बाढ़ क्षेत्र में निर्माण की अनुमति मिल गई और कंक्रीट के जंगल इस तेजी से फैलते गए कि जमीन की पानी सोखने की क्षमता लगभग समाप्त हो गई. जब पानी के प्राकृतिक रास्ते बंद कर दिए जाएंगे तो वह अपना रास्ता स्वयं बनाएगा, और वही आज बाढ़ और जलभराव के रूप में दिखाई दे रहा है. इससे भी अधिक चिंता का विषय हमारी टाउन प्लानिंग की सोच है. अधिकांश शहरों के मास्टर प्लान कागजों तक सीमित हैं. जहां योजनाएं हैं, वहां उनका पालन नहीं होता और जहां नियम हैं, वहां राजनीतिक और आर्थिक दबाव उन्हें निष्प्रभावी बना देते हैं. नगर निगम, विकास प्राधिकरण, सिंचाई विभाग और पर्यावरण एजेंसियों के बीच समन्वय का अभाव स्थिति को और जटिल बना देता है. परिणाम यह होता है कि एक विभाग सड़क बनाता है, दूसरा नाला बंद कर देता है और तीसरा जलभराव दूर करने के लिए करोड़ों रुपये की नई योजना घोषित कर देता है .इसी के साथ जलवायु परिवर्तन ने इस संकट को और गहरा कर दिया है. अब वर्षा का स्वरूप बदल चुका है. पहले जहां बारिश कई दिनों में होती थी, वहीं अब कुछ घंटों में ही पूरे महीने जितना पानी बरस जाता है.

दुर्भाग्य यह है कि हमारे शहरों की जल निकासी व्यवस्था आज भी पुराने मानकों पर आधारित है. बदलते मौसम के अनुरूप न तो ड्रेनेज सिस्टम का विस्तार हुआ और न ही शहरी नियोजन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को पर्याप्त महत्व मिला. यह समय केवल राहत पैकेज घोषित करने या मुआवजा बांटने का नहीं है. आवश्यकता इस बात की है कि देश में शहरी नियोजन की पूरी व्यवस्था की नए सिरे से समीक्षा की जाए. प्रत्येक शहर का वैज्ञानिक ड्रेनेज मास्टर प्लान बनाया जाए. नदियों के बाढ़ क्षेत्र, तालाबों, आर्द्रभूमियों और प्राकृतिक जल निकासी मार्गों को कानूनी संरक्षण मिले. निर्माण की अनुमति देने से पहले जल निकासी और पर्यावरणीय प्रभाव का कठोर मूल्यांकन अनिवार्य किया जाए. साथ ही, अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई केवल कागजी अभियान न होकर राजनीतिक इच्छाशक्ति का प्रमाण बने.

बहरहाल, बाढ़ का पानी कुछ दिनों में उतर जाएगा, लेकिन यदि हमारी सोच नहीं बदली तो अनियोजित विकास की यह बाढ़ आने वाले वर्षों में देश के आर्थिक संसाधनों, शहरी व्यवस्था और नागरिकों के विश्वास को लगातार बहाती रहेगी. अब निर्णय सरकारों को करना है कि वे हर वर्ष आपदा का इंतजार करेंगी या स्थायी समाधान का रास्ता चुनेंगी.

समान शिक्षा : महान नागरिक राष्ट्र की आधारशिला

डॉ. दिलीप सिंह

समुदाय, विद्यालय और सरकार मिलकर कार्य करते हैं, तब प्रत्येक सरकारी विद्यालय उत्कृष्टता का केंद्र बन सकता है और प्रत्येक बच्चा अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुंच सकता है. इक्कीसवीं सदी में विकास की एक नई सोच उभरकर सामने आई है, जो केवल आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं है. गरिमामय भारत इसी विचार पर आधारित है कि प्रत्येक मनुष्य की जन्मजात गरिमा, समान अवसर, स्वतंत्रता और सम्मान किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति के मूल आधार हैं. केवल आर्थिक विकास पर्याप्त नहीं है; ऐसा विकास आवश्यक है जो प्रत्येक नागरिक को सम्मानपूर्वक जीवन जीने, अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास करने तथा सुखी और सार्थक जीवन जीने का अवसर प्रदान करे.

सन् 1949 में अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने अपने उद्घाटन भाषण में विश्व के अनेक देशों को अविकसित क्षेत्र बताते हुए उनके आर्थिक विकास के लिए सहायता की आवश्यकता पर बल दिया. उसी समय से विकास की अवधारणा को मुख्यत: आर्थिक वृद्धि, सकल घरेलू उत्पाद, आय तथा भौतिक समृद्धि के आधार पर मापा जाने लगा. सन् 1990 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) की शुरुआत की. इसके प्रणेता प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. महबूब उल हक का स्पष्ट मत था कि विकास का अर्थ केवल राष्ट्रीय आय बढ़ाना नहीं है, बल्कि लोगों के विकल्प और स्वतंत्रता का विस्तार करना है.

एचडीआई तीन प्रमुख संकेतकों पर आधारित है— स्वास्थ्य (औसत जीवन प्रत्याशा), जीवन स्तर (प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय) और शिक्षा (वयस्कों की औसत स्कूली शिक्षा तथा बच्चों के अपेक्षित स्कूली शिक्षा वर्ष). इन दोनों दृष्टिकोणों— आर्थिक विकास और गरिमा-आधारित मानव विकास—में एक बात समान है कि शिक्षा दोनों की अनिवार्य शर्त है. शिक्षा ही व्यक्ति को आर्थिक रूप से सक्षम बनाती है और साथ ही उसे गरिमापूर्ण जीवन जीने की चेतना भी प्रदान करती है. भारत विश्व की सबसे बड़ी स्कूली शिक्षा व्यवस्था का संचालन करता है. देश में लगभग 14.71 लाख विद्यालय, 24.69 करोड़ विद्यार्थी तथा 1 करोड़ से अधिक शिक्षक हैं. यह शिक्षा के प्रति राष्ट्र की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का प्रमाण है. किन्तु इस विशाल व्यवस्था के पीछे अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं. शिक्षा मंत्रालय द्वारा 7 जुलाई, 2026 को जारी यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस% 2025-26 की रिपोर्ट के अनुसार, छात्रों के स्कूल में बने रहने और स्कूल के इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार के बावजूद, कक्षा-1 में दाखिला लेने वाले केवल 51.9 प्रतिशत छात्र ही कक्षा-12 तक स्कूल में बने रहते हैं. एएसईआर-2024 के अनुसार, कक्षा 5 के लगभग 56 प्रतिशत विद्यार्थी कक्षा 2 का पाठ सहजता से नहीं पढ़ पाते. लगभग 70 प्रतिशत बच्चों में बुनियादी अंकगणितीय दक्षता का अभाव है. अनेक विद्यालयों में एक ही शिक्षक कई कक्षाओं को एक साथ पढ़ाता है. अनेक छात्र प्राथमिक स्तर की बुनियादी पढ़ने-लिखने और गणना करने की क्षमता से भी वंचित हैं, जबकि अनेक बालिकाएँ केवल आधारभूत सुविधाओं के अभाव में विद्यालय छोड़ देती हैं (नीति आयोग 2026). भारत आज विश्व का सबसे युवा देश है. वर्तमान में देश की औसत आयु लगभग 29 वर्ष है. किन्तु 2047 में यही युवा आबादी वृद्धावस्था की ओर बढ़ जाएगी. यदि हम आज अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आवश्यक कौशल प्रदान नहीं कर पाए, तो भारत अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने का अवसर खो रहा है. भारत पहले भी अनेक अवसरों को गंवा चुका है—चाहे आर्थिक सुधारों में विलंब हो अथवा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप शिक्षा एवं कौशल विकास में पर्याप्त निवेश का अभाव. यदि शिक्षा में सुधार नहीं हुआ, तो 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त करना अत्यंत कठिन होगा.

अर्थशास्त्र के अनेक शोध स्पष्ट करते हैं कि यदि किसी देश के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में एक मानक विचलन का सुधार हो जाए, तो दीर्घकाल में उसकी आर्थिक विकास दर लगभग दो प्रतिशत अंक तक बढ़ सकती है. अर्थात शिक्षा केवल सामाजिक न्याय का साधन नहीं, बल्कि आर्थिक समृद्धि का सबसे बड़ा निवेश भी है. इसी उद्देश्य से भारत सरकार ने जुलाई 2021 में निपुण भारत मिशन (एन.आई.पी.यू.एन.) प्रारम्भ किया, ताकि प्रत्येक बच्चा प्रारम्भिक कक्षाओं में मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक दक्षता (एफ.एल.एन.) प्राप्त कर सके. प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में पढ़ने, लिखने और गणना करने की बुनियादी क्षमता विकसित करना है, जबकि उच्च शिक्षा का उद्देश्य युवाओं को रोजगार, नवाचार तथा जीवन की जटिल समस्याओं के समाधान हेतु तैयार करना है. यह केवल सरकार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है.

महाकौशल की डायरी

पूर्व महापौर का छलका दर्द...

अविनाश दीक्षित

जबलपुर शहरी क्षेत्र की बेपटरी यातायात व्यवस्था को लेकर पूर्व महापौर सदानंद गोडबोले का दर्द छलक गया. बीते दिनों फेसबुक पोस्ट में उन्होंने सवाल उठाते हुए लिखा कि शहर की यातायात व्यवस्था दयनीय हालत में है, लेफ्ट- राइट टर्न पर ऑटो चालकों और मैकेनिकों का कब्ज़ा है, इस पर ना कोई प्रभावी कार्रवाई हो रही है और ना ही ध्यान दिया जा रहा है. पूर्व महापौर और सामाजिक - राजनीतिक कार्यकर्ता की पीड़ा दायी बात सौ फीसदी सही है. इसमें कोई दो राय नहीं है कि नगर का प्रत्येक तिराहा - चौराहा अतिक्रमण, अवैध पार्किंग की जकड़ में है और लोग प्रतिदिन हलाकान होते हुए नजर आ रहे हैं.

सोशल मीडिया से लेकर अन्य संचार माध्यमों में बदहाल यातायात व्यवस्था पर प्रतिदिन ढेरों कमेंट किए जाते हैं. जब तब जाम में एम्बुलेंस फंसने की खबरें अब सामान्य घटना मानी जाने लगीं हैं. अनेक जनप्रतिनिधि इस मुद्दे को उठा चुके हैं, पर समस्या यथावत है. इस दुर्दशा से कब निजात मिलेगी, इस पर कुछ कहा नहीं जा सकता, मगर पूर्व महापौर की पोस्ट के बाद चर्चाओं का नया दौर शुरू हो गया है. गपोलबाजी के बीच लोग सवाल पूछ रहे हैं कि जब वह महापौर रहे हैं तब क्या यह समस्या नहीं थी..? 2004-05 में तो शहर में उतने वाहन भी नहीं थे, जितने आज रजिस्टर्ड हैं. 2015 में उनकी अर्धांगिनी डॉक्टर स्वाति गोडबोले ने महापौर का दायित्व संभाला, उनके कार्यकाल के दौरान भी ट्रैफिक बदहाली की खबरें सुर्खियों में रहीं, मतलब समस्या जस की तस बनी रही.

कहने का आशय यह नहीं है कि गोडबोले की फेसबुक पोस्ट कोई दुर्भावना से ग्रसित है, उनकी बातें प्रशासनिक कार्य प्रणाली पर सवालिया निशान लगाने वाली हैं, किंतु प्रदेश में सत्तानशीन पार्टी से जुड़े होने के चलते यह सवाल जरूर उठ रहे हैं कि सार्वजनिक मंच पर जब कोई पार्टी कार्यकर्त्ता अपनी ही सरकार की प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल खड़े करे तो यह बाहर आना जरूरी है कि खामी कहां है..?

बहरहाल पूर्व महापौर की पोस्ट से यह संकेत मिल ही गया कि जमीनी स्तर पर समस्याएं गंभीर हैं और इन हालातों में सम्बन्धित विभागों को संज्ञान लेकर सुधारात्मक प्रयासों को मूर्तरूप देने की जरूरत है. यह देखना दिलचस्प होगा कि उपरोक्त सवालों के पश्चात यातायात विभाग, नगर निगम एवं जिला प्रशासन यातायात व्यवस्था को सुधारने के लिए कोई कदम उठाते हैं या फिर वरिष्ठ नेता की बातें एक बार फिर सिर्फ टीस बनकर रह जायेंगी.

वाकई एमपी अजब है..

बीते 3 जुलाई को शहडोल में एक संविदा मेडिकल ऑफिसर रिश्वत लेते पकड़ा गया. प्रारंभ में लोकायुक्त की इस कार्रवाई को सामान्य ट्रैप कार्रवाई समझा गया, परंतु डॉक्टर महेश चंद्र शर्मा की रिश्वत कांड की गूँज जब मीडिया में वायरल हुई तब और भी हैरत अंग्रेज खुलासा हुआ. पता चला कि शहडोल के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ऊफरी में पदस्थ डॉक्टर शिवपुरी के सहसराम स्थित पीएचसी में भी कार्य कर रहा था. इसके बाद खबर खरगोन जिले से आई जहां रिश्वतखोर डॉक्टर की पदस्थापना जिले के सेगांव प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में होने की आई, इसकी पुष्टि वहां के बी एम ओ डॉक्टर कुलदीप गोयल ने की. उन्होंने बताया कि डॉक्टर शर्मा सप्ताह में 3 दिन 24 घंटे ड्यूटी पर रहते थे और शेष तीन दिन उन्हें नियमानुसार अवकाश दिया जाता था. इस मामले में जांच जारी है किंतु सवाल उठ रहे हैं कि डॉक्टर शर्मा ने प्रशासनिक व्यवस्था का फायदा उठाया या फिर उनका साथ कोई और सरकारी नटवरलाल दे रहा था..?

वारकरियों के सामने बाढ़ की बाधा

इस वर्ष भारी वर्षा व बाढ़ का कारण बताकर लाखों वारकरियों को देहू-आलंदी आने से रोका गया. आषाढ़ में प्रतिवर्ष वारकरी आते हैं और मजे से बारिश में भीगते हैं, लेकिन इस वर्ष मूसलाधार बारिश के साथ ही इंद्रायणी नदी बाढ़ की चपेट में है. प्रकृति ने वारकरियों के मार्ग में बाधा डाल दी. इसके साथ ही इंसान का लालच भी इसके लिए जिम्मेदार है. इंद्रायणी, पवना, मुला-मुठा नदियों का प्राकृतिक प्रवाह रोककर वहां सड़कें, महामार्ग व मकान बनाए गए. नदियों से बड़े पैमाने में रेत निकाली जाती है. इससे नदी का प्रवाह बदलता है. इंद्रायणी के कोप की वजह यह भी मानी जा रही है, जो बिजली के खंभे व पुल बहाकर ले गई. शहर के एक्सप्रेसवे से लगे अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय व स्टेडियम भी जलमग्न हो गए. कनेक्टिंग लिंक भी बाढ़ से प्रभावित हुई. पुणे व मुंबई में सैकड़ों वृक्ष धराशायी हो गए. नदियों के प्राकृतिक प्रवाह तथा पर्यावरण की किसी को चिंता ही नहीं है. विकास के नाम पर वृक्षों को काटा जाता है. ऐसी स्थिति में प्रकृति का प्रकोप सामने आता है.

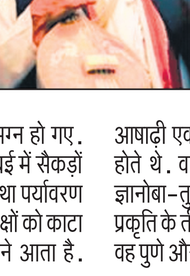

बिल्डर, ठेकेदार, उद्योजकों का सरकार व प्रशासन पर प्रभाव रहता है, इसलिए उनकी मनमानी पर रोक नहीं लग पाती. उल्लेखनीय है कि जब भीमा नदी पर उजनी बांध का शिलान्यास हुआ था, तब तत्कालीन मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण ने विट्ठल भगवान से प्रार्थना करते हुए कहा था कि मैं आपकी चंद्रभागा इसलिए रोक रहा हूं कि सिंचाई हो और किसानों का भला हो. इसके लिए मुझे क्षमा करना. तब यशवंतराव ने किसानों के हित में यह किया था, लेकिन अब नदी का मार्ग रोकने वाले कौन हैं? बेरोकटोक निर्माण कार्य होने से नदी में बाढ़ आएगी ही. वारकरियों को रोके जाने से उनका दिल दुख रहा है. पिछले वर्ष तक वारकरी श्रद्धापूर्वक देहू-आलंदी पहुंचते थे और आषाढ़ी एकादशी को विट्ठल का दर्शन करने पंढरपुर में एकत्र होते थे. वारी में पालकी लेकर और अपनी सुधबुध खोकर ज्ञानोबा-तुकाराम का नाम लेते हुए नाचते-गाते थे. इस बार प्रकृति के तीखे तेवरों ने उनका आनंद छीन लिया. इसके बावजूद वह पुणे और फिर पंढरपुर की ओर बढ़ रहे हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

रखनी है मजबूत लीडरशिप राज्यों में मत रखो क्षत्रप

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, नेहरू युग में प्रदेशों में भी लोकप्रिय और दबंग नेता हुआ करते थे. तब उत्तरप्रदेश में गोविंद वल्लभ पंत, मध्य प्रदेश में रविशंकर शुक्ल, राजस्थान में मोहनलाल सुखाड़िया, बिहार में श्रीकृष्ण सिन्हा, बंगाल में डॉ. बिधानचंद्र राय, ओडिशा में बीजू पटनायक व हरेकृष्ण मेहताब, पंजाब में प्रतापसिंह कैरो जैसे नेता थे. इनमें से अधिकांश स्वाधीनता सेनानी थे और उनका अपने क्षेत्रों में अच्छा-खासा प्रभाव था.'

हमने कहा, 'आप मोदी युग में पं. नेहरू के जमाने को क्यों याद कर रहे हैं? देश की प्रथम पंक्ति के नेताओं को आज लोग भूल चुके हैं. इस समय राजनीति में 99 प्रतिशत से भी ज्यादा पावर केंद्र सरकार के पास है. अधिकांश राज्यों का नेतृत्व बौने या मनोनीत नेताओं का है, जो सैटेलाइट टाइप के हैं. उन्हें कुछ वर्ष पहले तक कोई जानता तक नहीं था. जानबूझकर कमजोर व केंद्र से दबने वाले नेता सीएम की कुर्सी पर बिठाए गए हैं. अपना जनरल नॉलेज बढ़ाने के लिए जान लीजिए कि राजस्थान में भजनलाल शर्मा, मध्य प्रदेश में मोहन यादव, ओडिशा में मोहन चरण माझी, उत्तराखंड में पुष्कर सिंह धामी, हरियाणा में नायबसिंह सैनी मुख्यमंत्री हैं. गुजरात में 12 वर्षों में मोदी-शाह ने कितने ही सीएम बदलकर रख दिए. बीजेपी के केंद्रीय नेतृत्व की नीति है कि राज्यों में मजबूत क्षत्रप मत रखो. ऐसा नेता रखो जिसकी अपनी आवाज न हो और जो पूरी तरह केंद्र के इशारे पर काम करे.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इसीलिए राजस्थान में वसुंधरा राजे को सीएम नहीं बनने दिया गया और मध्य प्रदेश में बेहद लोकप्रिय हुए शिवराज सिंह चौहान को वहां से हटाकर केंद्रीय कृषिमंत्री बनाया गया. राज्यों में मुख्यमंत्री अचानक बदल दिया जाता है, जिसका कोई कारण नहीं बताया जाता. गुजरात में रूपाणी और असम से सर्वानंद सोनोवाल इसी तरह हटाए गए. बीजेपी के विधायकों-सांसदों को जताया जाता है कि वे जिस पद पर हैं, मोदी की वजह से हैं. उनकी अपनी कोई औकात नहीं है. प्रधानमंत्री खुद चुनाव प्रचार सभा में कहते हैं- उम्मीदवार कौन है, उसका चेहरा मत देखो. आप कमल पर बटन दबाओ, वोट सीधा मोदी के खाते में जाएगा. जब तक विपक्ष में बिखराव है, देश में मोदी-शाह का एकाधिकार है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12314
- डॉ. सागर खादीवाला

1		2		■	3	■	4
	■		■	5		■	
6			■	7		■	
	■	8			■	9	
■	10		■	11	12		■
13		■	14				15
16		17	■		■	18	
	■	19		■	20		

बाएं से दाएं
1. आग या गर्मी से भड़क उठने वाला पदार्थ (एक्सप्लोसिव) 5. चौथाई (सं.) 6. फिसलन, उतार, रिपोर्ट 7. भूमि जोतने का प्रसिद्ध उपकरण 8. योग्य 9. बरगद, वर 10. स्वर्ण, कंचन, नींद लेना 11. बहुत शोक आदि के कारण खड़े-खड़े गिरकर बेहोश हो जाना, कुश्ती का एक दांव 13. वह अनुकूल या प्रिय अनुभव जिसके सदा होते रहने की इच्छा हो 14. मल्ल 16. रूप या अस्तित्व देना, रचना 18. नया 19. इंद्र का प्रधान अस्त्र 20. इच्छा, चाह, बुलावा

ऊपर से नीचे
1. घूमना-फिरना (सं.) 2. एकटक देखना, 'टक-टक' शब्द करना 3. जो तौला या कूता न जा सके 4. प्रसिद्ध 5. किसी जगह अधिक लोगों के आने-जाने से उत्पन्न हुई सजीवता, रौनक 9. समुद्राग्नि (सं.) 10. शोषण करना, जल या नमी चूस लेना 12. पेड़ की त्वचा, वल्कल 13. प्रात:काल, सवेरा 15. मुसलमानों के शासनकाल में किसी बड़े प्रदेश या सूबे के लिए नियुक्त राज्याधिकारी 17. नौका

Solution 12313

ज	य	ज	य	का	र	■	आ
न्म	■	न	म	न	■	श	ह
प	ल	क	■	न	फ	र	त
त्री	■	■	अ	■	र	मा	■
■	भ	■	भ	र	मा	ना	■
द	व	■	य	व	न	■	चा
शा	दी	शु	दा	■	■	ख	त
■	य	■	न	का	रा	त्म	क

द्व

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में बैचारिक अशांति रहेगी, सत्संग से मन आकस्मिक शांति ओर सुख रहेगा. संतोष बना रहेगा. व्यवसायिक तनाव रहेगा. पारिवारिक चिन्ता विवाद रहेगी. वर्ष के मध्य में राजनैतिक मित्र के सहयोग से पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. नई योजना का विचार होगा. वर्ष के अन्त में धार्मिक कार्यो की रूपरेखा पर विचार विमर्श होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों की नई योजनाओं में विचार विमर्श होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा. नौकरी में स्थिति सुदृढ रहेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यवसायिक तनाव रहेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्य व्यस्तता रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यो में व्यय करना होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को लगन और निष्ठापूर्वक कार्यो में सफलता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बालक सुंदर, सुशील, व्यक्तित्वान होगा, शरीर से कोमल तथा भावुक होगा, दूसरों को शीघ्र ही अपनी ओर आकर्षित करने में सफल होगा. पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

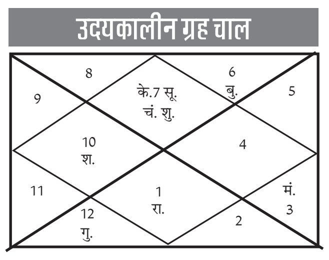

पंचांग

रा.मि. 19 संवत् 2083 आषाढ कृष्ण एकादशी भृगुवासरे रात 1/21, भरणी नक्षत्रे दिन 9/47, शूल योगे रात 1/43, वव करणे सू.उ. 5/15, सू.अ. 6/45, चन्द्रचार मेष दिन 3/25 से वृषभ, पर्व- योगिनी एकादशी व्रत, (स्मार्त), शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10, 12 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

आषाढ कृष्ण एकादशी को भरणी नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, चांवल, चांदी, नमक सरसों अलसी लाख गेहूं, जौ, चना के भाव में वृद्धि होगी, गुड, खांड के भाव मे साधारण उठाव आयेगा. भाग्यांक 2612 है.

मेष- अधिकारी आपकी कार्यशैली से नाराज हो सकते है. अधिनस्थ वर्ग से सहयोग मिलेगा. बेरोजगारों को प्रयास करने पर सफ्लता मिलेगी.

वृषभ- अधिकारों के लिये संघर्ष करना पड़ सकता है. अविवाहित वैवाहिक कार्य को लेकर उत्साहित रहेंगे. आर्थिक कार्यो की पूर्ति होगी.

मिथुन- नये संपक्र संपक्र बीती बातको भूलकर काम में जुट जायें, सफ्ल रहेंगे. अधिक वाक पटुता से काम बिगड़सकता है. पुराने मित्रों का सहयोग रहेगा.

कर्क- आपके विचारों से अधिकारी प्रभावित होंगे. प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता के आसार है. अचानक लाभ. पूज्यव्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

सिंह- मनचाहा काम मिलने से उत्साह रहेगा. राजकीय कार्य बनाने के आसार हैं. इच्छित कार्य में सफ्लता मिलेगी. किसी अनसोचे कार्यमें व्यस्तता रहेगी.

कन्या- आपको अपने फैसले से पछताना पड़ सकता है. नये कार्य वृषभे बढ़ाने में परेशानी होगी. नौकरी में अधिनस्थ वर्ग के असहयोग से काम बिगड़ सकता है.

तुला- नये संपर्क आपकी तरक्की में सहायक रहेंगे. साथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी. व्यापार में प्रगति होगी. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

वृश्चिक- जिम्मेदारी नहीं निभाने से परेशानी हो सकती है. विरोधी आरोप लगाने का प्रयास करेंगे. संतान पक्ष की चिन्ता रहेगी. अनुकूल परिस्थितियों का लाभ मिलेगा.

धनु- झूठ बोलकर काम कराने का प्रयास हानिकारक हो सकता है. व्यवसायिक क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी. महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे. कम परिश्रम से अच्छी सफ्लता मिलेगी.

मकर- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे. कार्य क्षमता के बल पर अपनी पहिचान बना लेंगे. माता पिता का भक्त सहयोग मिलेगा. मान सम्मान मिलेगा.

कुम्भ- विरोधियों को मात देने में कामयाब रहेंगे. अटके काम पूरे होंगे. धर्म कर्म के प्रति आस्था रहेगी. नवीन योजनाओं का विकास होगा. परिश्रम अधिक होगा.

मीन- विवादास्पद मामलों में समझौता करना पड सकता है, रोगी की चिन्ता रहेगी. अतिथि वृषभमन होगा. इष्ट मित्रों का सहयोग मिलेगा.

SUDOKU 7446

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-डोकू 7445

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1